International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 18-01-2025, Accepted: 19-02-2025, Published: 06-03-2025
Volume 11, Issue 1, 2025, Page No. 57-59

समकालीन कथा साहित्य में विज्ञान कथा लेखन के विकास का अध्ययन

कविता लिटौरिया[1], डॉ. के. सी. जैन[2]
[1] शोधार्थी, हिन्दी विभाग, महाराजा छत्रसाल बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय छतरपुर, मध्यप्रदेश, भारत
[2] प्राचार्य एवं प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, शास. अग्रणी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, टीकमगढ़, मध्यप्रदेश, भारत

सारांश
हिन्दी साहित्य में काव्य के विकास के पश्चात् गद्य का चहुंमुखी विकास देखनें को मिलता है। यह गद्य साहित्य की विभिन्न विधाओं में देखने को मिलता है। नाटक का विकास हो या एकांकी का विकास उपन्यास का विकास हो या कहानी का लगभग सभी विधाओं में जीवन के विभिन्न पहलुओं पर साहित्यकारों की पैनी नजर दिखाई पड़ती है। चाहे वह ग्राम्य जीवन हो, नगरीय जीवन हो, नारी अथवा स्त्री विमर्श हो, दलित विमर्श हो, किन्नर विमर्श हो या पर्यावरण विमर्श हो। सभी के विषय में गंभीरता से सोचा एवं लिखा गया। परन्तु इन सभी के लेखन के तले विज्ञान लेखन कहीं पीछे छूट गया। वैज्ञानिक विमर्श अथवा विज्ञान साहित्य की अवधारणा कहीं बहुत पीछे छूट गई। इसका यह आशय नहीं है कि विज्ञान लेखन नहीं हुआ, विज्ञान लेखन हुआ तो है परन्तु उसे साहित्य में जो स्थान मिलना चाहिए वह अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है। कई विद्वान एवं आलोचक तो अभी भी विज्ञान लेखन अथवा विज्ञान साहित्य को साहित्य की श्रेणी में न रखकर केवल विज्ञान आलेख अथवा फंतासी लेखन के अंतर्गत मानते आये है। इस कारण से विज्ञान कथाओं, उपन्यासों अथवा नाटकों को साहित्य में एक सकारात्मकता के साथ स्वीकार नहीं किया जा सका है।

मूल शब्दः विज्ञान, विज्ञान कथा, गल्प, विकास, तकनीकि, भविष्य, अतीत, रोबोट, मशीन, वैज्ञानिक

हिंदी में विज्ञान लेखन की शताब्दी पूरी हो चुकी है। जो यह कहा जाता है कि हिंदी में विज्ञान की पुस्तकें नहीं हैं तो यह झूठ है। विज्ञान के लगभग सभी विषयों पर हिंदी में सैकड़ों पुस्तकें उपलब्ध हैं। धीरे–धीरे विज्ञान शब्दावली का भी विकास हुआ। भारत सरकार के शब्दावली आयोग ने पारिभाषिक शब्दावलियाँ छापी हैं। इनमें वैज्ञानिक शब्दों की कमी नहीं है। हालाँकि उनमें कई शब्द कारखाने में बने शब्द जैसे हैं। उन्हें आम भाषा के शब्दों से बदला जा सकता है। लोक में जो शब्द प्रचलित हैं, उन्हें अधिक लेना चाहिए ताकि हर व्यक्ति उन्हें समझ सके।
हिंदी साहित्य में विज्ञान कथा की परंपरा के विकास को मूलतः तीन चरणों में बाँटा जा सकता है।
पहला चरण, स्वतंत्रता के पूर्व की विज्ञान कथाएँ,
दूसरा चरण, स्वतंत्रता के बाद की विज्ञान कथाएँ,
तीसरा चरण, समकालीन समय की विज्ञान कथाएँ हैं।

इसको दूसरे शब्दों में कहा जाए तो शुरुआती दौर की विज्ञान कथाएँ दूसरा चरण, विकास के दौर की विज्ञान कथाएँ तीसरा चरण, विकसित दौर की विज्ञान कथाएँ हैं। हिंदी साहित्य में विज्ञान कथा की परंपरा का यह विभाजन कोई लक्ष्मण रेखा नहीं है। हाँ, यह जरूर है कि विज्ञान कथाओं में प्रवृत्तिगत परिवर्तन को देखते हुए और इसकी समृद्ध व लम्बी परंपरा को विभिन्न चरणों में विभाजित करके इनका अध्ययन और विश्लेषण करना सरल हो जाता है।

मुख्य भाग

हिंदी साहित्य में स्वतंत्रता के पूर्व या शुरुआती दौर की विज्ञान कथाओं पर पाश्चात्य विज्ञान कथाओं का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। जिस प्रकार पाश्चात्य देशों के शुरुआती दौर में अंतरिक्ष, ग्रहों, नक्षत्रों आदि से संबंधित विभिन्न विज्ञान कथाएँ लिखी गयीं, उसी प्रकार हिंदी साहित्य में भी विज्ञान कथाएँ लिखी गयीं। इस दौर में मौलिक विज्ञान कथाओं का अभाव रहा है। हिंदी साहित्य में विज्ञान कथा लेखन की परंपरा की शुरुआत बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक से होता है। यदि गौर से देखा जाए तो पं. अम्बिकादत्त व्यास द्वारा संपादित पत्रिका 'पीयूष प्रवाह' में धारावाहिक के रूप में 'आश्चर्य वृत्तांत' (1883 ई.) हिंदी विज्ञान कथा सर्वप्रथम प्रकाशित होती हैं। कालक्रम की दृष्टि से देखने पर यह हिंदी साहित्य की पहली विज्ञान कथा मालूम पड़ती है, जबकि कुछ विज्ञान कथाकार और आलोचक सुप्रसिद्ध पत्रिका 'सरस्वती' के भाग–1, संख्या–7 में प्रकाशित बाबू केशव प्रसाद सिंह की विज्ञान कथा 'चंद्रलोक की यात्रा' (1905 ई.) को हिंदी साहित्य की पहली विज्ञान कथा मानते हैं। यदि दोनों हिंदी विज्ञान कथाओं के कथानकों का विश्लेषण किया जाए तो 'आश्चर्य वृत्तांत' पर जूल्स बर्ने का उपन्यास 'जर्नी टू सेन्टर ऑफ द अर्थ' का प्रभाव दिखाई पड़ता है। वहीं पर 'चंद्रलोक की यात्रा' पर जूल्स बर्ने के उपन्यास 'फाइव वीक्स इन ए बैलून' का प्रभाव दिखाई पड़ता है।
कुछ लोग पाश्चात्य विज्ञान कथाओं के प्रभाव के कारण इन्हें हिंदी साहित्य की पहली विज्ञान कथा मानने से इनकार करते हैं। मुझे जहां तक प्रतीत होता है कि कोई भी विधा एकाएक उत्पन्न नहीं हो सकती है।
हिंदी साहित्य में पहली विज्ञान कथा के विषय में डॉ. राजकुमारी उपाध्याय का मानना है कि '' 'चंद्रलोक की यात्रा' और 'आश्चर्यजनक घंटी' को हिंदी की प्रारम्भिक वैज्ञानिक कहानियाँ नहीं कहा जा सकता, क्योंकि ये दोनों ही विदेशी साहित्य फ्रांसीसी और अमेरिकन साहित्य से उधार ली गयी हैं।''
हिंदी विज्ञान कथा साहित्य की परंपरा को यदि ध्यान से देखा जाए तो शुरुआती दौर (1900ई.) से लेकर विकास के दौर (1950ई.) तक पाश्चात्य विज्ञान कथाओं से प्रेरित व प्रभावित हिंदी में कई विज्ञान कथाएँ लिखी गयी हैं। इसी समय कई पाश्चात्य विज्ञान कथाओं का अनुवाद भी प्रकाशित किया गया था। अनेक वर्षों से आ रही इस परंपरा को सर्वप्रथम राहुल सांकृत्यायन तोड़ते हैं। पं. राहुल सांकृत्यायन द्वारा 'बाईसवीं सदी' 1924 ई. में एक लघु उपन्यास लिखा गया, जो किताब महल इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक में न केवल विश्व सरकार और विश्व भाषा की संकल्पना विद्यमान है, बल्कि फोटोफोन (विडियो फोन), मोबाइल, इंटरनेट आदि की संकल्पना भी है। आजकल काफी हद तक उनकी सभी संकल्पनाएँ साकार हो चुकी हैं। यद्यपि पं. राहुल सांकृत्यायन समाजवादी विचारधारा से प्रभावित थे, तथापि

उसी के अनुरूप वे अपने इस लघुकाय उपन्यास में 2124 ई. के समाज का वर्णन करते हैं, यथा– ''भूमंडल में सभी जगह अब समता का राज्य है। अब मनुष्य बराबर है। स्त्री–पुरुष बराबर हैं। सभी जगह श्रम और भोग का समत्व मूल मंत्र रखा गया है। न अब भूमंडल में जमींदार हैं, न सेठ–साहूकार हैं, न राजा है।, न प्रजा, न धनी, न निर्धन, न ऊँच हैं, न नीच। सारे भूमंडलवासियों का एक कुटुम्ब है। पृथ्वी की सभी स्थावर जंगम संपत्ति इसी कुटुम्ब की संपत्ति है।'',

इस लघुकाय उपन्यास के पूरे कथानक में भारतीय परिवेश का परिचय मिलता है। इसमें भारत के विज्ञान व प्रौद्योगिकी की प्रगति, शिक्षा व्यवस्था, ग्रामीण संस्कृति व शहरी संस्कृति का परिचय मिलता है। पं. राहुल सांकृत्यायन अपने इस लघु उपन्यास में तत्कालीन समाज के जीवन के विषय में वर्णन करते हुए लिखते हैं ''मनुष्य कुल चार घंटे काम करके ही सारी आवश्यकताओं को प्राप्त कर बाकी बीस घंटे जीवन के अन्य आनंदों के उपभोग में लगाता है।'',

विज्ञान कथा की इस परंपरा में डॉ. नवल बिहारी मिश्र और यमुनादत्त वैष्णव 'अशोक' का इस क्षेत्र में आना इस विधा के लिए नव–जीवन की प्राप्ति के समान था। इन्होंने अपने प्रतिभा द्वारा विज्ञान कथा को मौलिक व आधुनिक स्वरूप प्रदान किया है। इन दोनों के विज्ञान की पृष्ठभूमि और उसका अध्ययन विज्ञान कथा के रचनाकारों के रचना संसार पर कथा की सृष्टि पर विस्मयकारी प्रभाव डालती है। डॉ. नवल बिहारी मिश्र के बहुमूल्य योगदान के विषय में डॉ. बाल फोंडके कहते हैं कि ''डॉ. नवल बिहारी मिश्र ने विशुद्ध विज्ञान कथाओं की रचना की और हिंदी विज्ञान कथा के सही स्वरूप की प्राण–प्रतिष्ठा की। भाषा, शिल्प, कथानक और विज्ञान की आत्मा के कारण इनकी कहानियाँ वास्तविक विज्ञान कथाएँ हैं।''

यदि हिंदी विज्ञान कथा के वास्तविक स्वरूप प्रदान करने के लिए डॉ. नवल बिहारी मिश्र को याद किया जाता है तो यमुनादत्त वैष्णव 'अशोक' को हिंदी विज्ञान कथाओं के भारतीयकरण के लिए याद किया जाता है। इन्होंने विज्ञान कथाओं को भारतीय परिवेश व देशकाल, वातावरण के अनुरूप ढाला है। डॉ. अरविंद मिश्र इनके योगदान की चर्चा करते हुए कहते हैं– ''यदि भावी विज्ञान कथा के स्वरूप निर्धारण में डॉ. नवल बिहारी मिश्र का अमूल्य योगदान है तो यमुनादत्त वैष्णव 'अशोक' ने इसे देशज स्वरूप प्रदान किया।''

डॉ. संपूर्णानंद एवं आचार्य चतुरसेन शास्त्री (1891–1960 ई.) ने विज्ञान कथा क्षेत्र में प्रवेश कर विविध हिंदी विज्ञान कथाएँ हिंदी पाठकों को उपलब्ध करायीं। अतः हिंदी साहित्य के विज्ञान कथा की परंपरा इनकी हमेशा ऋणी रहेगी। डॉ. संपूर्णानंद ने अपने ज्योतिष ज्ञान के आधार पर लघु उपन्यास 'पृथ्वी से सप्तर्षि मंडल' (1953 ई.) लिखा। इन्होंने अपने ज्योतिष ज्ञान के आधार पर पृथ्वी से दूर ग्रहों एवं पिंडों पर भारतीयता की छाप छोड़ी है और वहाँ पर अपने ज्ञान के आधार पर प्राचीन संस्कृति के बिम्बों को ढूँढा है। डॉ. संपूर्णानंद 1953 ई. में लिखते हैं ''साइंस फिक्शन (वैज्ञानिक कहानी) लिखने का अभी चलन नहीं है और यह बड़ी कमी है..... इससे वाङ्मय की एक त्रुटि दूर होगी और रोचक भाषा में विज्ञान के गंभीर तत्वों से परिचय होगा।''

आचार्य चतुरसेन शास्त्री द्वारा लिखित वैज्ञानिक उपन्यास 'खग्रास' उनकी प्रखर प्रतिभा का प्रमाण है। इसके कथानक में 'विज्ञान' पर अत्यधिक जोर दिया गया है, जिससे कथानक एकपक्षीय नजर आता है। इसके बावजूद इन्होंने तत्कालीन समाज की विभिन्न घटनाओं को समेटते हुए वैज्ञानिक प्रगति को दर्शाया है। हिंदी विज्ञान कथा की परंपरा में इस वैज्ञानिक उपन्यास का महत्वपूर्ण योगदान है।

हिंदी साहित्य की विधा विज्ञान कथा की इस समृद्ध परंपरा में डॉ. ओमप्रकाश शर्मा ने कई वैज्ञानिक उपन्यासों का सृजन किया है, यथा – 'मंगल यात्रा' (1959 ई.), 'युग मानव' (1981 ई.), 'जीवन और मानव', 'गाँधीयुग पुराण' आदि।

विज्ञान कथा लेखन के प्रमुख स्तम्भकारों में देवेन्द्र मेवाड़ी (1975 ई.) भी एक हैं। आपने इसी दशक में विज्ञान कथा लेखन के क्षेत्र में प्रवेश किया और आज भी आप उसी ऊर्जा, श्रद्धा और कड़ी मेहनत से लेखन कार्य में व्यस्त हैं। देवेन्द्र मेवाड़ी का लघु उपन्यास 'सभ्यता की खोज', (1979 ई.) बुद्धिमान मशीनों पर ज्यादा निर्भरता के दुष्प्रभाव की ओर संकेत करती है। देवेन्द्र मेवाड़ी के दो हिंदी विज्ञान कथा संग्रह प्रकाशित हुए हैं 'भविष्य' (1994 ई.) तथा 'कोख' (1998 ई.)।

1980 के दशक में कई अतिमहत्वपूर्ण विज्ञान कथाकारों का इस परंपरा में आगमन हुआ था। इनमें डॉ. अरविंद, डॉ. राजीव रंजन उपाध्याय, हरीश गोयल आदि हैं। आप तीनों इस दशक के प्रतिनिधि विज्ञान कथाकार हैं। आपने न केवल गुणात्मक व प्रचुर मात्र में विभिन्न विज्ञान कथाएँ लिखीं, बल्कि काफी लम्बे समय से आ रही विज्ञान कथा की परंपरा को विविध आयामी बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आप सबने विज्ञान कथाओं की मूलभूत संवेदनाओं को नये स्वरूप प्रदान करने के साथ उनकी भाषा, शिल्प, शैली में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन किया है। इसके साथ साथ हिन्दी भाषा में विज्ञान की पत्रिकाओं का विस्तार अवश्य हुआ है जो विज्ञान को लोकप्रिय बनाने की दिशा में सक्रिय हैं। कुछ मुख्य पत्रिकाएँ निम्नानुसार हैं: –

विज्ञान (इलाहाबाद), संदर्भ (होशंगाबाद), स्रोत (भोपाल), विज्ञान चेतना (जयपुर), विज्ञान आपके लिए (गाजियाबाद), सामयिक नेहा (गोरखपुर) विज्ञान भारती प्रदीपिका (जबलपुर)। इसके अतिरिक्त विज्ञान प्रगति, विज्ञान लोक, विज्ञान जगत, अविष्कार तथा विज्ञान गरिमा सिंधु आदि पत्रिकाएँ भी उल्लेखनीय हैं। वैज्ञानिक साहित्य में अपना बहुमूल्य योगदान देने वाले विज्ञान लेखन के पुरोधाओं को जैसे स्वामी सत्यप्रकाश, डॉ. गोरख प्रसाद, डॉ. फूलदेव सहाय वर्मा, डॉ. बृजमोहन, डॉ. निहालकरण सेठी, डॉ. शिवगोपाल मिश्र, गुणाकार मुले, डॉ. रमेश दत्त शर्मा आदि को कैसे भूला जा सकता है। इसके अतिरिक्त वैज्ञानिक साहित्य सृजन के अन्य सशक्त हस्ताक्षर हैं सर्वश्री प्रेमचंद श्रीवास्तव, गणेश कुमार पाठक, जगनारायण, डॉ. रमेश बाबू, राम चन्द्र मिश्र, विजय चितौरी, आइवर यूशियल, इरफान ह्यूमेन, राय अवधेश कुमार श्रीवास्तव, डॉ. दीपक कोहली, डॉ. डी. डी. ओझा, विश्वमोहन तिवारी, डॉ. विष्णु दत्त शर्मा, डॉ. देवेन्द्र कुमार राय, देवेंद्र मेवाड़ी तथा डॉ. श्रवण कुमार।

एक विज्ञान कथाकार को मन से साहित्यकार होना अनिवार्य है। तभी वह विज्ञान जैसे विषयों में संवेदनाएँ पिरो सकता है। साथ ही एक विज्ञान कथाकार के लिए विज्ञान के विषयों की मूलभूत जानकारी भी आवश्यक है। उसे विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में हो रही नित नयी खोजों से वाकिफ होना चाहिए। तभी वह भविष्य की सार्थक कल्पना कर सकता है।

देश में हिन्दी में विज्ञान लेखकों की कमी नहीं हैं परन्तु लेखकों के इस विशाल समुदाय का कोई राष्ट्रीय संगठन नहीं है। करीब 3500 से अधिक हिन्दी में विज्ञान लेखक हैं जिनमें 150 महिलाएँ हैं तथा 8000 हजार से भी अधिक विज्ञान संबंधी पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। हिन्दी में विज्ञान की पाठ्य पुस्तकें लिखने वाले और प्रतियोगिता वाली पत्रिकाओं के लिए लगातार लिखते रहते हैं, वे हाई स्कूल से लेकर महाविद्यालय और विश्वविद्यालयों के परिसरों तक व्याप्त हैं। यह कहना मुश्किल है कि इनकी संख्या कितनी होगी किन्तु एक तरह से ये भी विज्ञान लेखक ही हैं। आज तक हिन्दी में विज्ञान लेखकों की कोई निर्देशिका भी प्रकाशित नहीं हुई ताकि लेखकों का आपसी पत्र व्यवहार अथवा सम्पर्क स्थापित करने का क्रम प्रारम्भ हो जाता। हर्ष की बात है कि हिन्दी भाषा में विज्ञान की पत्रिकाओं का अवश्य विस्तार हुआ है जो विज्ञान को लोकप्रिय बनाने की दिशा में सक्रिय हैं।

विज्ञान लेखन की कसौटी उसका मजबूत सैद्धांतिक आधार है। चाहे वह विज्ञान कथा हो या गल्प, उसके मूल में किसी वैज्ञानिक सिद्धांत अथवा ऐसी परिकल्पना को होना चाहिए जिसका आधार जाँचा–परखा वैज्ञानिक सत्य हो। अपनी बौद्धिकता और कल्पना की बहुआयामी उड़ान के बावजूद आपेक्षिकता का सिद्धांत इतना गूढ़ है कि उसे बाल साहित्य में सीधे ढालना आसान नहीं है। विज्ञान में मौलिक लेखन कम हुआ है और संदर्भ ग्रंथ न के बराबर हैं। लोकप्रिय विज्ञान साहित्य सृजन में प्रगति अवश्य हुई है परन्तु सरल, सुबोध विज्ञान साहित्य जो जन साधारण की समझ में आ सके कम लिखा गया है। इंटरनेट पर आज हिन्दी में विज्ञान सामग्री अति सीमित है। विश्वविद्यालयों तथा राष्ट्रीय वैज्ञानिक संस्थानों में कार्यरत विषय विशेषज्ञ अपने आलेख शोधपत्र अथवा पुस्तकें अँग्रेजी में लिखते हैं। वह हिन्दी अथवा अन्य भारतीय भाषा में विज्ञान लेखन में रुचि नहीं रखते। संभवतः भाषागत कठिनाई तथा वैज्ञानिक समाज की घोर उपेक्षा उन्हें आगे नहीं आने देती।

निष्कर्ष

यह हिंदी साहित्य में विज्ञान कथा विधा का संक्षिप्त इतिहास है। समाज में जैसे–जैसे विज्ञान का प्रचार–प्रसार बढ़ रहा है और उसकी महत्ता से लोग रू–ब–रू हो रहे हैं, वैसे–वैसे अब विभिन्न पत्र–पत्रिकाएँ भी इस विधा को महत्त्व दे रही हैं। इनमें अब इस विधा से संबंधित विभिन्न लेख दिन–प्रतिदिन प्रकाशित हो रहे हैं। यदि 'स्वतंत्र भारत', 'राष्ट्रीय सहारा', 'धर्मयुग', 'जनसत्ता', 'हंस', 'शिविरा' जैसी पत्र–पत्रिकाओं में कभी–कभी विज्ञानकथाओं का प्रकाशन होता है तो सुप्रसिद्ध पत्रिका 'विज्ञान प्रगति' के प्रत्येक अंक में हिंदी के मौलिक विज्ञान कथा व अनूदित विज्ञान कथा बराबर प्रकाशित हो रही है। इसके अतिरिक्त 'विज्ञानकथा', 'विज्ञान आपके लिए' जैसी पत्रिकाएँ लगातार विज्ञानकथाओं का प्रकाशन कर रही हैं। लेकिन यह बात अब भी सोचनीय है कि जो स्थान पाश्चात्य जगत् में विज्ञान कथा व कथाकारों का है, वह स्थान अभी भारत देश में नहीं है। इस यात्रा में हमें कई मंजिलों से गुजरना पड़ेगा, तभी हम वह मुकाम प्राप्त कर सकते हैं। मैं उम्मीद करता हूँ कि इक्कीसवीं सदी के अंत तक यह मुकाम विज्ञान कथा और कथाकार अवश्य ही प्राप्त कर लेंगे।

संदर्भ ग्रंथ

1. पं. शिवगोपाल मिश्र (संपादक), भारतीय भाषाओं में विज्ञान लेखन (लेख), विज्ञान (पत्रिका), प्रकाशकः विज्ञान परिषद प्रयाग, प्रयाग, अंकः 1989,
2. अजय सिंह, हिंदी साहित्य में विज्ञान कथा (शोध–प्रबंध), सन् 2002,
3. राहुल सांकृत्यायन, 'बाईसवीं सदी' प्रकाशकः किताबघर प्रकाशन, प्रयाग, संस्करणः 2012, (भारतीय विज्ञान कथाएं में संग्रहित), सम्पादकः शुकदेव प्रसाद
4. गोपाल प्रसाद मिश्र (संपादक), विज्ञान (पत्रिका), अंकः मई 2000, प्रकाशकः प्रयाग विज्ञान परिषद, प्रयाग
5. सूर्यकांत साह (अनुवादक), चंद्रलोक की यात्रा, प्रकाशकः इंडियन प्रेस इलाहाबाद, संस्करणः 1961,
6. गोपाल प्रसाद मिश्र (संपादक), विज्ञान (पत्रिका), अंकः मई 2000, पृष्ठ 4, प्रकाशकः प्रयाग विज्ञान परिषद, प्रयाग
7. शुकदेव प्रसाद (संपादक), विश्व विज्ञान कथाएँ, प्रकाशकः किताबघर प्रकाशन, दिल्ली, संस्करणः 2012,
8. शुकदेव प्रसाद (संपादक), भारतीय विज्ञान कथाएँ, प्रकाशकः किताबघर प्रकाशन, दिल्ली, संस्करणः 2012,
9. कैलाश साह, मृत्युंजयी (विज्ञान कथा संग्रह की भूमिका), प्रकाशकः राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करणः 1976,
10. डॉ. राजीव रंजन उपाध्याय (संपादक), विज्ञान कथा, (त्रैमासिक पत्रिका), प्रकाशकः भारतीय विज्ञान समिति, फैजाबाद, अंकः सितम्बर–नवम्बर 2016 ई.,
11. "मीडिया व्यग्रता का नहीं, समग्रता का परिचायक हो"–ब्रजकिशोर कुठियाला, साहित्य अमृत, अगस्त 15,
12. "विज्ञान पत्रकारिता"–शिवगोपाल मित्र, साहित्य अमृत, अगस्त 15,
13. एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक बाल साहित्यकार सीमूर साइमन का कथन
14. हिन्दी में वैज्ञानिक साहित्य सृजन की स्थिति–डॉ. नवीन प्रकाश सिंह 'नवीन'
15. 'मेरी विज्ञान डायरी'–देवेंद्र मेवाड़ी